कर्बला की घटना

जनाब मिर्ज़ा सज्जाद हुसैन साहब

सत्य और असत्य की शक्तियों में सदैव टकराव होता रहा है, प्रकाश व अंधकार सृष्टि की रचना से आज तक कमागत रूप से संघर्षमय है परन्तु किसी सत्य व असत्य की लड़ाई में वह आकर्षण स्थायित्व और सार्वभौमिकता नहीं है जो कर्बला के युद्ध में है। निःसन्देह कर्बला की घटना केवल इस्लामी इतिहास भी है और अविसमरणीय भी।

कर्बला की घटना का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ कि जब 60 हिजरी में माविया के देहान्त के उपरान्त यज़ीद ने राज्य सिंहासन ग्रहण किया तो उसने इमाम हुसैन से स्वयं को धार्मिक अधिष्ठता स्वीकार कर लेने को कहा। स्पष्ट है कि इमाम हुसैन[अ०] का ऐसा आदर्श व्यक्ति यज़ीद के ऐसे दुराचारी व कुकर्मी व्यक्ति को अपना आध्यात्मिक नेता कैसे मान सकते थे, अतएव इमाम हुसैन[अ०] ने उसे धार्मिम अधिष्ठता मानने से इन्कार कर दिया। इसके बाद इमाम हुसैन[अ०] मक्का हज के लिए रवाना हुए परन्तु मक्के में भी यज़ीद की ओर से कुछ व्यक्ति हाजियों के भेष में भेजे गए थे कि वह इमाम हुसैन[अ०] को कहीं पाते ही उनकी हत्या कर डालें। यथाकरण इमाम हुसैन[अ०] हज से एक दिन पूर्व कर्बला की ओर रवाना हो गए। जब सम्पूर्ण विश्व से सिमट-सिमट कर मुसलमान काबे में जमा हो रहे थे तो काबे के सम्मान का संरक्षक हुसैन[अ०] उसी काबे के आदर व महिमा को सदैव के लिए सुरक्षित रखने हेतु इराक़ की ओर प्रस्थान कर रहा था। इमाम हुसैन[अ०] रास्ते ही में थे कि हुर की सेना मिलती है जो प्यासी दृष्टि गोचर होती है (यह सेना इमाम हुसैन[अ०] के विरोधियों एवं शत्रुओं की थी) इमाम हुसैन[अ०] ने उस समय अत्यन्त हृदय विशालता, उदारता एवं दानशीलता का परिचय इस प्रकार दिया कि उस मरुस्थल में जहाँ इमाम की जान की क़ीमत और पानी की क़ीमत लगभग समान होती है, अपने साथ का सब पानी हुर की सेना को पिलवा दिया और फिर इमाम हुसैन[अ०] के प्रतिभाशाली व्यक्तिव की यह बात भी अविस्मरणीय है कि जब कर्बला पहुँचने पर सावतीं मुहर्रम से यज़ीद की सेना ने इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों पर पानी बन्द कर दिया तो इमाम हुसैन[अ०] के किसी बच्चे ने भी यह नहीं कहा कि कल हम ने तुम्हें पानी पिलाया था, इसलिए तुम आज हमें पानी पिला दो। इसका कारण यह था कि इमाम हुसैन[अ०] यह बताना चाहते थे कि वह तो हमारे चरित्र की पराकाष्ठा थी कि तुम जब प्यासे थे, तो हम ने तुम्हें पानी पिला दिया था परन्तु यह तुम्हारे चरित्र की हीनता है कि यद्यपि हम समय पर तुम्हारी प्यास बुझा चुके हैं परन्तु तुम हमें ही पानी पिलाने से इन्कार कर रहे हो।

इसी उदारता एवं हृदय विशालता का परिचय देते हुए आप दो मुहर्रम को कर्बला पहुँच गए और आपको नदी से दूर ख़ेमे लगाने पर बाध्य कर दिया गया। मुहर्रम की सात तारीख़ से इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों पर पानी बन्द कर दिया गया। 7 मुहर्रम की रत्रि आई। युद्ध आरम्भ होने ही वाला था कि इमाम हुसैन[अ०] ने हज़रत अब्बास[अ०] से कहा जाओ और इन यज़ीदियों से कह दो कि हमें एक रत्रि का समय और दे दें जिस से हम अपने पालनहार ईश्वर को अपनी प्रार्थनाओं एवं भक्तियों द्वारा प्रसन्न कर लें। केवल इतना ही नहीं अपितु इस रत्रि में इमाम हुसैन[अ०] ने अपने साथियों की वफ़ादारी की परीक्षा भी ले ली और फ़रमाया कि मेरे साथियो। मैं तुम से अपनी बैअत (अर्थात तुम ने मुझे जो धार्मिक अधिष्ठाता स्वीकार किया है) अलग करता हूँ तुम में से जो चाहे चला जाए। फिर कहा कि यदि किसी को इस प्रकार जाने में लज्जा का बोध हो रहा हो तो देखो मैं दीपक बुझाए देता हूँ, अब जिसको जाना हो चला जाए परन्तुः-

हुसैन इब्ने अली ने फ़ितरतें बदली हैं एक शब में।
बुझी है शमा और महफिल से परवाने नहीं जाते।।

कोई उठकर न गया बल्कि इमाम हुसैन[अ०] के साथी यह कहते हुए दृष्टिगोचर होते हैं कि आपकी मुहब्बत में एक बार क़त्ल होना कैसा हमें सत्तर बार भी क़त्ल किया जाए और हमारी ख़ाक हवा में उड़ा दी जाए और हमें फिर ज़िन्दगी मिले तब भी हम आप पर जीवन बलिदान करने को अपने लिए गौरव का विषय समझेंगे। निःसन्देह इमाम हुसैन के साथियों के चरित्र को देखेने के

बाद हमें कहना पड़ता है कि कर्बला में दिल बहत्तर थे धड़कन एक थी, शरीर बहत्तर थे आत्मा एक थी, ख़ून अलग-अलग थे परन्तु तड़प एक थी।

दसवीं मुहर्रम की सुबह आई। इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथी नमाज़ के लिए खड़े हुए यज़ीद की सेना युद्ध के लिए तैयार हुई। एक ओर सुबह की सफ़ेदी थी दूसरी ओर शाम का अंधकार, एक ओर धूल पर तयम्मुम (नमाज़ के पहले यदि वज़ू करने के लिए पानी उपलब्ध न हो तो धूल पर एक विशेष प्रकार से हाथ मार कर मुँह पर मलने को तयम्मुम कहा जाता है) हो रहा था, दूसरी ओर घोड़ों को पानी पिलाया जा रहा था। एक ओर नमाज़ पढ़ने के लिए लोग पंक्तिबद्ध हो रहे थे, दूसरी ओर युद्ध के लिए तत्परता दिखायी जा रही थी, एक ओर रुकू (नमाज़ पढ़ने में झुकना) हो रहे थे, दूसरी ओर कमानें (धनुष) लचक रहे थे, एक ओर मानव-चरित्र को उच्चतम बनाने वाले सजदे (नमाज़ में शीश नवाना) थे, दूसरी ओर धुरात्मक रूप से सिर ऊँचे उठे हुए थे, एक ओर स्थायी सफ़लतता, इमाम हुसैन[अ०] के साथियों के मुख ज्योतिमान व प्रकाशित किए हुए थी, दूसरी ओर धन व एश्वर्य के खोटे सिक्के आँखों को चकाचौंध कर रहे थे। यहाँ तक कि यज़ीद की सेना की ओर से एक तीर युद्ध का संदेश लेकर आ गया। युद्ध आरम्भ हुआ। अपराह्न तक इमाम हुसैन[अ०] के समस्त साथी व सम्बन्धी शहीद हो गए। हज़रत अली अकबर[अ०] के चाँद से सीने पर बरछी लगी हज़रत क़ासिम[अ०] का शव घोड़ों की टापों से रौंद डाला गया, हज़रत अब्बास[अ०] के बाज़ू कटे, हज़रत अली असग़र[अ०] के गले पर तीर लगा। अब इमाम हुसैन[अ०] स्वयं सेना के सामने आए। फ़रमा रहे हैं कि बताओ मेरे क़त्ल का क्या औचित्य है? क्या मैंने धर्म में कुछ परिवर्तन किया है, क्या मैंने किसी की धन-सम्पत्ति पर अनाधिकृत रूप से अधिकार जमाया है? क्या मैंने किसी पर किसी प्रकार का अत्याचार किया है? इमाम हुसैन[अ०] के इस कथन पर हज़रत अली अकबर[अ०] के क़ातिल, हज़रत अली असग़र[अ०] के क़ातिल, इमाम हुसैन[अ०] के परिवार को नष्ट करने वाले यह कहते हुए दृष्टिगोचर होते हैं कि हुसैन तुमने कोई पाप या अत्याचार नहीं किया है। हुसैन[अ०] के कहने का भी उद्देश्य यही था कि दुनिया देख ले कि मेरे क़ातिल भी इस बात को स्वीकार कर रहे हैं कि हम आपको क़त्ल कर सकते हैं परन्तु आपकी चरित्र की पराकाष्ठा से इनकार नहीं कर सकते। तदोपरान्त इमाम हुसैन[अ०] पर तीर व व तलवार के वार होने लगे। अंततः इमाम हुसैन[अ०] प्रहारों से चूर होकर घोड़े से ज़मीन पर आ गए दुष्ट पापी शिम्र ने हुसैन[अ०] का सिर काट लिया। फ़ुरात का पानी उछलने लगा, काली आँधी चलने लगी, वातावरण अंधकार पूर्ण हो गया और आवाज़ें आ रही थीं ''हुसैन[अ०] क़त्ल कर दिए गए'', ''हुसैन[अ०] शहीद कर दिये गए''।



शेष...... है शबाब अपने लहू की आग..........

को लिए हुए ख़ेमे की तरफ़ आ रहे हैं। अब्बास[अ०] भी साथ हैं अली अकबर[अ०] भी साथ हैं। सैय्यिद-ए-आलम हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] की बूढ़ी कनीज़ फ़िज़्ज़ा दौड़ी हुई शाहज़ादी के पास आई और क़दमों पर सर रखकर बोली, मेरी शाहज़ादी! आपके बेटे मारे गए। ज़ैनब[स०] ने आसमान को देखा और सर ख़ालिक़ के सजदे में झुका दिया और खुदा के दरबार में अर्ज़ कीः मेरे अल्लाह तेरा शुक्र कि मैं कामयाब हो गई। मेरे भाई के क़दमों पर मेरी कमाई क़ुर्बान हुई।

एक वक़्त वह भी आया जब इमाम हुसैन[अ०] का 32 साल का शेरदिल भाई अबुलफ़ज़लिल अब्बास[अ०] मैदान में आया और एक ही हमले में इब्ने साद की टिड्डी-दल फ़ौज की सफ़ें तोड़ डालीं और नहर में घोड़ा डाल दिया। मगर जब सकीना की मश्क नहर से भर कर ख़ेमे की तरफ़ जाने लगे तो पूरी फ़ौज ने तीरों, तलवारों और नेज़ों से हमला कर दिया अली[अ०] का बहादर बेटा ज़ख़्मी होकर घोड़े से गिरा। अलमदारे लश्करे हुसैनी को गिरते हुए देखकर इमाम हुसैन[अ०] ने अपनी कमर थाम ली और फ़रमाया अब्बास[अ०]! तुम्हारे मरने ने मेरी कमर को तोड़ दिया।

फिर इस सूरज ने वह मन्ज़र भी देखा जब इमाम हुसैन[अ०] का अटठारह साल का ख़ूबसूरत बेटा अली अकबर[अ०] मैदान में आया। इमाम[अ०] ने आसमान पर नज़र फ़रमाई और खुदा के दरबार में अर्ज़ की। ऐ मेरे परवरदिगार! तू गवाह रहना कि अब जंग के मैदान में मेरा वह ख़ूबसूरत बेटा जा रहा है जो तेरे रसूल[स०] की बिल्कुल तस्वीर है।

अली अकबर[अ०] ने बेपनाह जंग की मगर किसी ज़ालिम ने छुप कर बरछी का वार किया और शहज़ादा तेवरा कर ज़मीन पर गिरा। माँ हज़रत लैला और फूफी हज़रत ज़ैनब ख़ेमे के दरवाज़े पर खड़ी हैं। इमाम आली मक़ाम नौजवान की लाश पर आ गए। अली अकबर[अ०] अपने ख़ून में एड़ियाँ रगड़ रहे हैं, बूढ़े बाप ने नौजवान बेटे के गाल पर अपना गाल रख दिया और आसमान की तरफ़ मुँह करके आवाज़ दी ऐ मेरे चाँद! तेरे बाद अब इस दुनिया की ज़िन्दगी पर ख़ाक है।